सत्संग परमसंत पुष्करदयाल जी महाराज
दिनांक 17 जनवरी 2016, दुर्गापुर

! राधा–स्वामी.!

गुरू के दर्शन के बिना अब नींद तक आती नही।

जग की वस्तु कोई भी मन को मेरे भाती नही।।

जब गुरू से प्रेम हो जाता है, फिर हमेशा 24 घण्टे गुरू का ही ध्यान रहता है। फिर उसको 2 घण्टे–2½ घण्टे समाधि लगाने की जरूरत नही है। क्योंकि वो 24 घण्टे समाधि में रहता है। कबीर साहब कहते हैं–

हमन है इश्क मस्ताना, हमन दुनिया से यारी क्या।

जब गुरू से प्रेम हो जाता है, तो संसार छूट जाता है। ये नही कि हाथ में कंमडल लेकर, गेरूए वस्त्र पहनकर जंगलों, पहाडों में जाता है, ऐसा नही। गृहस्थ में रहकर सारे काम करते हैं, बच्चों को पढाते हैं, लिखाते हैं, उनके घर बसाते हैं, लेकिन ध्यान अपने सतगुरू में रहता है। दुनिया से कोई यारी नही रहती। जो गुरू से बिछुड जाते हैं, वो दर–दर ठोकरें खाते रहते हैं। जो गुरू से प्रेम नही करते, जो गुरू का ध्यान नही करते वो दर–दर भटकते रहते हैं।

कामी तरे क्रोधी तरे, पापी तरे अनंत।

आन उपासक कृतघ्न, तरे ना नाम रटंत।।

जो अपने को और सतगुरू को दो समझता है, मैं अलग हूँ और सतगुरू अलग है, फिर वो सतगुरू को ढूँढने कांशी जाता है, मथुरा वृंदावन जाता है, केदारनाथ जाता है, और ऐसे ही भटकता रहता है। क्यों? जब सतगुय उसके 24 घण्टे पास है, फिर वो बद्रीनाथ, केदारनाथ में कहा0161 मिलेगा? वो हमेशा हमारे पास रहता है। इसलिए कहते हैं–द्वि को दूर कर दो।

प्रेम गली अति सांकरी, जा में दो ना समाई।

जब मालिक से मिलना है, तो मालिक के साथ एक होना पडेगा। ये रास्ता बहुत कठिन है और नाजुक है, लेकिन जब गुरू साथ हो, तो सारा वजन गुरू ही ले लेता है। इसलिए–

सतगुरू खोजो रे भाई, जगत में दुर्लभ रतन यही है।

अगर इस संसार में कोई दुर्लभ रत्न है, तो वो है सतगुरू, और सतगुरू बिना प्रेम के नही मिलेगा। सतगुरू का भोजन है प्रेम। सतगुरू से प्रेम करो, सतगुरू आपका गुलाम हो जाएगा, भगवान काप रूप क्या है?

नही रूप कोई हैं सब रूप तेरे।

भगवान का रूप है प्रेम। भगवान प्रेम के रूप में हमारे अंदर बैठा है। जब हमारा प्रेम जागृत हो जाता है, हर किसी का प्रेम जागृत नही होता है। प्रेम उसका जागृत होता है जिस पर गुरू की दया होती है। और जब आपका प्रेम जागृत हो गया, फिर आप भी वही बन जाते हैं, जिसको आप ढूँढ रहे थे। You are God, God का और कोई रूप नही है।

नही रूप कोई हैं सब रूप तेरे।

हम सब उसी के रूप हैं। लेकिन कब बनते हैं हम उसका रूप। जब हमारे अंदर प्रेम जागृत हो जाता है। लेकिन प्रेम हर किसी का जागृत नही होता। गुरू नानक कहते हैं–

लाखन मध्य मत गिनो, कोटिन में कोऊ एक।

करोडों में कोई एक होता है, जिसके अंदर प्रेम जागृत हो जाता है, और जिसके अंदर प्रेम जागृत हो गया, वो भगवान बन गया। हम कहते है– हे भगवान हमको दर्शन दो, क्या भगवान आसमान में लटक रहा है? वो कहीं आसमान में नही लटक रहा। वो तुम्हारे अंदर है, किस रूप में?

प्रेम के रूप में है। प्रेम को जागृत करो, जब तुम्हारा प्रेम जागृत हो गया, You are God, वही बन जाओगे, जिसको तुम ढूँढ रहे थे। अंग्रेजी में कहते हैं–

Self Realization is God Realization.

अगर तुमको भगवान देखना है, तो पहले अपने आपको देखो तुम कौन हो? जब तुमको पता लगेगा मैं कौन हूँ? तुमको अपने आप ही पता लगेगा, भगवान कौन है?

नही रूप कोई हैं सब रूप तेरे।

उसका अपना कोई रूप नही है, उसका रूप है प्रेम। उसको बोलते हैं Super Conseusness, वो एक अहसास है। वो Macro है, Macro Mean बडा है, और हम उसी का रूप है Micro, उसी का छोटा रूप। वो ही हैं हम। वो Super Conseusness है, और हम उसी Super Conseusness का अंश हैं, जिसको सुरत बोलते हैं। हमारे अंदर सुरत उसी का अंश हे। जब वो जागृत हो जाता है, तो प्रेम का रूप धारण करता है। ये प्रेम नही जो हम अपने बच्चों के साथ करते हैं। इसको मोह बोलते हैं। जब प्रेम जागृत हो जाता है, तो आपको सारा संसार प्रेम ही प्रेम नजर आएगा। तुम किसी से नफरत नही करोगे। सबसे प्रेंम करोगे, क्योंकि आपको सबमें मालिक नजर आएगां, और जब सबमें मालिक नजर आएगा, फिर आप सबसे प्रेम करोगे। जब तुम्हारा प्रेम जागृत हो जाएगा, You are God.

हम सतगुरू के शरणागत क्यों हो जाएँ? गुरू क्या है? गुरू क्या करता है हमारे लिए? हमें गुरू क्यों चाहिए? हमें गुरू इसलिए चाहिए क्योंकि हम इस संसार में दर–बदर ठोकरें खा रहें हैं। ये संसार हमारा अपना घर नही है। हमारा घर कहीं और है, हम कहीं और से आए हुए हैं, और हम बिछुड के इस संसार में आ गए हैं, और यहाँ आकर पापड बेल रहें हैं, ठोकरें खा रहे हैं, मुसीबत झेल रहें हैं। रोग, बीमारियाँ, बेरोजगारी, भुखमरी, मजहब के ऊपर काट–मार, जायदाद के ऊपर काट मार, यही तो रोज हो रहा है इस संसार में। आप किसी भी दिन के न्यूज पेपर में पढो, यही देखोगे आप। इस संसार में हम आए हैं, लेकिन कर क्या रहे हैं? शब्दानंद महाराज हर बार यही कहते थे, हम पापड बेल रहे हैं। क्या यही काम रह गया हमारा पापड बेलने का? ये संसार कोई रहने की चीज नही है, हम क्या करते हैं यहाँ? मरते हैं जीते हैं, और जीकर भी पढाई कर ली, नौकरी कर ली, शादी कर ली, बच्चे बनाए, उनकी शादियाँ कर ली, और फिर मर गए। फिर से पैदा हो गए, फिर यही करने लगे। इसके अलावा कुछ और करते हैं हम? और इसी में हम फँसे हुए हैं। आप इस संसार में ये सब करने नही आए हो, तुम इस संसार में इसलिए आए हो, तुम्हे ये जन्म इसलिए दिया है कि तुम अपने सारे कर्मों को खत्म करो, तुम जो कर्मों की टोकरी अपने साथ लाए हो, उसे खाली करो और अपने निज धाम वापिस चलो। हम जहाँ से आए हैं, वापिस वहीं चलो, वहाँ क्या है? वहाँ पर अनंत शांती, अनंत सुख, अनंत आनंद है, परमशांति है वहाँ पर, और इस संसार में क्या है? यहाँ 24 घण्टे कीचड, दलदल में फँसे पडे हैं। कभी झूठ बोलते हैं, कभी सच बोलते हैं, यही तो करते हैं सारा दिन। सच को झूठ करते हैं, और झूठ को सच करते हैं। पापी पेट के लिए क्या–2 नही करते हैं हम। ऐसा क्या करें? अगर यही संसार होता, दूसरी कोई जगह है ही नही, तो चलो फिर बैठो इसी संसार में। लेकिन हमारे पास एक Option है, हमारे पास दूसरी जगह है एक, जहाँ पर ये सब नही है। वहाँ शांति है, अमन है, आनंद है, सुख है, क्यों ना हम वहाँ जाएँ? क्यों हम इस दलदल में फँसे रहें? क्यों ना हम वहाँ चले जाएँ। वहाँ हम कैसे जा सकते हैं? वहाँ जाने का एक ही तरीका है, गुरू शरणागत हो जाओ, फिर गुरू तुमको अपने साथ ले जाएगा। एक बार गुरू ने हाथ पकड लिया, फिर नही छोडता है। तुम चाहे छुडाने की कोशिश करो, वो फिरन से तुम्हारे घर जाकर पकड लेगा, तुम क्यों नही आते हो सत्संग में? सत्संग में आया करो। एक बार गुरू ने हाथ पकड लिया, फिर वो नही छोडता, और छोडेगा भी क्यों? अगर हाथ छोडना ही था, तो हाथ पकडता क्यों? लेकिन एक बार हाथ पकड लिया, उसको नही छोडता। गुरू जो है सबका हाथ पकडने नही आता है। क्या एक गुरू सारे संसार के आँशु पोंछ सकता है? नही पोंछ सकता है। थोडे से अपने, जैसे क्राईस्ट कहते

हैं– ये मेरी भेड हैं, मुझे अपनी भेडों को संभालना है। तो गुरू भी ऐसे ही करता है, गुरू भी अपनी भेडों को संभालता है। तो गुरू हमको क्यों चाहिए? क्योंकि हमको एक दिन अपने घर वापिस जाना है, जहाँ से हम आए हैं, वहीं है हमारा घर, और वहाँ जाने का रास्ता हमें नही मालूम। वहाँ जाने का रास्ता गुरू ही जानता है, और गुरू ने जब हमारा हाथ पकड लिया, फिर वो अपने साथ ले ही जाएगा, रास्ते में नही छोडेगा। इसलिए कहते हैं– गुरू शरणागत हो जाओ।

सतगुरू खोजो रे भाई, जगत में दुर्लभ रतन यही है।

गुरू हमारी पहचान कराता है। शेर का एक बच्चा भटक गया और भेडों के झुण्ड में जाकर घास खाने लगा, और मैं–मैं करने लगा। तो एक दिन शेरनी ने देखा ये तो मेरा बच्चा है, पकड कर लायी उसको और बोली तू शेर का बच्चा है, यहाँ भेडों के झुंण्ड में क्या कर रहा है? वो मैं–मैं करने लगा, तो शेरनी उसको पानी के पास ले गई और बोली उसको, देख तेरी शक्ल मुझसे मिलती है ना। वो बोला हाँ मिलती है, तो जैसे मैं दहाडूँगी वैसे ही तू दहाड। शेरनी दहाडी, फिर वो भी दहाडा, तो सारे भेड भाग गए। तो शेर के बच्चे को पता लग गया, हाँ मैं भेड का बच्चा नही हूँ, शेर का बच्चा हूँ। यही काम गुरू हमसे कराता है, वो हमारी पहचान कराता है, तुम कौन हो? तुम भेड के बच्चे नही हो, तुम शेर के बच्चे हो, तुम मालिक के बच्चे हो। यही पहचान कराता है गुरू। गुरू का काम यही है हमारी पहचान करा देना, हम कौन हैं?

मेरी आयु जो है, आज 86 साल है। लेकिन जब कोई सत्संगी मुझसे पूछता है कि मैं कितने साल का हूँ? तो मैं उससे कहता हूँ कि मैं 36 साल का हूँ, क्यों ? 36 साल पहले मुझे गुरू मिला था, उस दिन मेरा नया जन्म हो गया। गुरू मिलने से पहले हम सब डाँगर (पशु) हैं, हममे और पशु में कोई फर्क नही है। पशु का काम भी वही है, चारा खाना, बच्चे बनाना, ओर हमारा काम भी वही है खाना खाना, शादी करना और बच्चे बनाना। फिर पशु और हममें क्या फर्क है? लेकिन जिस दिन गुरू मिला, उस दिन हमारा नया जन्म शुरू हो जाता है। क्यों? क्योंकि उस दिन हमको विवेक आ जाता है, गुरू हमारी सोच बदल देता है, कि तुम इस संसार में डाँगर का काम करने नही आए हो, तुम कुछ और काम करने आए हो। क्योंकि मनुष्य जन्म सबसे उत्तम जन्म है। मनुष्य जन्म देवताओं को भी नही मिलता है। देवताओं को एक काम है, और सारी जिंदगी उनको वही काम करना है, और देवताओं को कोई मुक्ति नही है। मुक्ति जो है वो मनुष्य जन्म में ही है। जिस दिन हमको गुरू मिला, उस दिन नई जिंदगी शुरू हो गई हमारी। गुरू हमारी पहचान कराता है, तुम डाँगर नही हो, तुम मनुष्य हो। मनुष्य का काम है मनुष्य बनना, मनुष्य कैसे बनेंगे हम? जब हम गुरू के शरणागत हो जाएंगे। गुरू के शरणागत हो गए, बस! गुरू मिला तो क्या कमाना। फिर जो करेगा, वो गुरू करेगा। एक बात याद रखो, अगर गुरू ने कहा– जा बेटा ये तेरा आखिरी जन्म है। गुरू के वचन तो सत्य होंगे ही, लेकिन हमको जीते जी खुद ये अहसास करना है कि हाँ ये मेरा आखिरी जन्म है। एक बेटा होता है और वो बाजार में सब दुकानदारों से उधारी करके आता है। सारे दुकानदार आ जाते हैं घर पर उधारी माँगने के लिए। बाप को पता चलता है, बाप पर्स से पैसे निकाल करके सारे दुकानदारों को देता है, और अपने बेटे की गर्दन छुडा लेता है। अब बेटे को क्या चाहिए? बेटा अगर फिर से बाजार जाकर दुकानदारों से उधारी करके लाएगा? इसी तरह हमको भी यह निश्चित करना है कि हाँ ये मेरा आखिरी जन्म है। तो निश्चित करते–2, क्या हो जाएगा? आप तर जाओगे। एक नमक की डली समुद्र की तह ढूँढने जाती है, जाते–2 रास्ते में ही सागर बन जाती है। वही हमारा हाल होता है।

लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तिति लाल।

लाली देखन मैं गई, मैं ही हो गई लाल।।

जब हम अपने आपको निश्चित करते हैं, हाँ ये मेरा आखिरी जन्म है। तो निश्चित करते–करते हम ही सागर बन जाते हैं। फिर गुरू के वचन सत्य हो गए।

!! राधा स्वामी !!